आज के सन्दर्भ में राम कथा

साकेत विन्यस्त पाद पद्माय ते

वामहस्तालोल चारु चापाय ते।

सत्य वाक्याय ते धर्म रूपाय ते

सीता सती प्राणनाथाय वन्दनम्॥

साकेत नगर में स्थित उन पाद पद्मो को, वाम हस्त में सुंदर धनुरबाणों को धराण करने वाले, धर्म के प्रतिरूप और सत्यवाक् पालन करने वाले उस सीता पति को प्रणाम करते है।

रामायण भारतीय आत्म है। उस की रचना हजारों साल के पहले होने से भी आज भी उसे मार्ग दर्शक रूप में अपनाते है। उस में ऐसे आदर्श व्यक्ति का वर्णन मिलता है , जो आज भी हमे पूजनीय है। सब लोग नतमस्तक हो जाते हैं। राम कथा मानव चेतना की कहानी है। इस तरह की बहु मूल्य रत्न रूपी रचना देने वाले वाल्मीकी महाकवि को भी सादर प्रणाम करते हुए इस चर्चा को आगे बढाऊंगी।

कूजन्तं राम रामेति मधुरं मधुराक्षरम्।

आरुह्य कविताशाखं वन्दे वाल्मीकि कोकिलम्॥

वाल्मीकेर्मुनिसिंहस्य कवितावनचारिणः।

श्रुण्वन् रामकथानादं को न याति परां गतिम्॥

यः पिबन् सततं रामचरितामृतसागरम्।

अतृप्तस्तं मुनिं वन्दे प्राचेतस मकल्मषम्॥

"रामचरितमानस" में रामचंद्र प्रभु की कथा के बारे में वर्णन करते हुए तुलसी दास जी कहते हैं – 'राम अनंत, अनंत गुण अमित कथा विस्तार' श्रीराम अनंत है और उनके गुण अनंत है। उन की कथाओं का विस्तार भी अनंत है।

राम कथा मंदाकिनी चित्रकूट चित चारू

तुलसी सुभाग सनेह बन सिय रघुवीर बिहारू।

रामकथा मंदाकिनी भाँति है। कवि का सुंदर चित्त चित्रकूट है। इस चित्रकूट में तुलसी स्नेहापूरित तुलसी वृक्ष के वन की भांति है जिस में सीता सहित श्रीराम निरंतर विहार करते हैं।

ऐसे सुंदर चित्रकूट धाम में अतिसुंदर राम की कथा के बारे में हम चर्चा कर रहे हैं।

आज का समाज समिष्टि से व्यष्टि की ओर बढ रहा है। आधुनिकता के परदे पाश में संयुक्त परिवारों का विघटन हो रहा है। व्यक्ति स्वकेन्द्रिय बनता जा रहा है। पारिवारिक बंधनों के मूल्यों के बारे में कोई भी जानकारी नहीं रख रहे हैं। रामायण में उन्हीं पारिवारिक बंधनों के बारे में ही प्रमुख रूपे से चर्चा की गई है।

मूर्तिपूजा और मिठाइयों के साथ त्योहार मनाने वाले व्यक्ति भगवान का भौतिक सुखों के लिए प्रयोग करने वाले अधमस्तर के होते हैं। भजन और पारायण द्वारा वाक् को भगवान पर लीन करके दिव्य आनंद पाने वाले व्यक्ति मध्यम स्तर के होते हैं। ये माध्यमिक स्तर के व्यक्ति भौतिक सुखों के अलावा उच्च स्तर के दिव्य आनंद को प्राप्त करते हैं। उत्तम स्तर के व्यक्ति सत्संग द्वारा विश्लेषण करके ज्ञान प्राप्तकर, उसे आध्यात्मिक साधना के लिए उपयोग करते हैं। अतः आज श्रीराम के बारे में विश्लेषण करके ब्रह्मज्ञान को पाकर, उसे अपनी साधना में आचरण करते हुए दैवानुग्रह प्राप्त करना उत्तम लक्षण है। मध्यम स्तर के व्यक्ति का लक्ष्य है आत्मानंद पाना। उत्तम स्तर के व्यक्ति का लक्ष्य है खुद दुखी होते हुए भी भगवान को आनंदित करना।

रामायण के अंतरार्थ को भी समझ लीजिए। राम को देखते ही यह समझना चाहिए कि ईश्वर नराकार में आयेगा। राज्य रूपी अर्थ का और सीता रूपी काम का त्याग करने वाले राम दत्त का स्वरूप है। 'ददाति इति दत्तः'। दत्तः का अर्थ है दान या त्याग। ऐसे रामचंद्र प्रभु को इस संदर्भ में एक बार हम वंदना करते हुए -

भज भज भास्कर कुल संजातम्

रामं शार्ङ्गधनुर्धर मेतम् (टेक)

1. निष्काम भक्ति तपसा क्रीतम्। ज्ञानाग्नि वचन तेजश्शातम्

धर्म स्थापन लोक विभातम्। साक्षात् नारायणमायातम्॥

2. वाल्मीकि सुकवि कविता गीतम्। स्वादर्श कथा गङ्गापूतम्

हनुमद्भुज पीठासन नीतम्। केवल सायक दशमुख पातम्॥

3. पट्टाभिषेक सुर समवेतम्। वामाङ्कासन सीता प्रीतम्।

स्वचरित गायक कुशलव तातम्। सकल चराचर सूत्र प्रोतम्॥

राम ने एक या दो बार अति आवश्यक परिस्थितियों के अलावा कभी भी महिमाओं का प्रदर्शन नहीं किया। राम ने अहल्या के श्राप विमोचन और शिव के धनुर्भंग की घटनाओं में ही महिमाओं का प्रदर्शन किया। अर्थात् ईश्वर भी अपने द्वारा सृष्टि की गई प्रकृति के नियमों का खुद भंग नहीं करता। इसलिए सीता परिणय होने के बाद ही राम को लोगों ने भगवान के रूप में पहचान लिया। राम ने केवल वचनों को या भावों को स्थान न देकर उन के बदले दार्शनिक सिद्धांत का आचरण करके दिखाया। अतः उस तरह के सत्य की साधना के द्वारा ही समझना चाहिए। हनुमान ने भी ऐसे ही आचरण किया। सीता ने राम को अयोध्या में और जंगल में भी नहीं छोडा। अतः यह समझना चाहिए कि कर्म फल रूपी सुख-दुख जब आएँगे तब स्वामी को छोडना नहीं चाहिए। राम का पूरा जीवन कर्म योग पर आधारित है। राम एसे रहते थे मानो वे कभी बातें न कर के और किसी प्रकार के भावों का प्रदर्शन न करके आचरण की मूर्ति के रूप में बने रहें। यही साधना की चरम सीमा है। हनुमान की भी यही स्थिति है। हनुमान ने कभी किसी तरह की बातें या स्त्रोत्र पाठ और किसी भाव का प्रदर्शन (भक्ति का) न करते सिर्फ राम की सेवा की।

“रामो विग्रहवान् धर्मः ”

‘राम’ शब्द का अर्थ है **“रमते इति रामः”** अर्थात् राम ने नराकार का पूरा रमण किया और **‘सीता’** का अर्थ है सीधी रहने वाली हल की रेखा अर्थात् प्रकृति नियमों का सीदा अनुसरण करने वाली एक जीवात्मा है। उस तरह की जीवात्मा का नराकार वाले परमात्मा को पहचान कर उन का आश्रय पाना ही सीता राम परिणय का अंतरार्थ है।

सामाजिक बंधन के सामन पारिवारिक बंधन की प्रमुखता है। भगवान के प्रति जो प्रेम रखते हैं वो परिवार के प्रति दिखाने वाले प्रेम से बढकर रहना चाहिए। समाज के प्रति जो प्रेम रखते हैं उसे परिवार तक ही सीमित रखना है। इस से आगे बढकर व्यक्ति पर ध्यान देना है। वो व्यक्ति नराकार में उपस्थित व्यक्ति होना चाहिए। इस के बारे में रामायण में वर्णन किया गया है। अपनी पत्नी के प्रति प्रेम के कारण राम ने समाज कल्याण को भी छोडा। राम ने रावण से कहा कि सीता को वापस दे दो। अगर सीता वापस मिलेगी तो राम उस के साथ अयोध्या जाएगा। इस संदर्भ में यह मालूम पडता है कि रावण ने संसार को सताया और राम ने उसे दण्ड नहीं दिया। यहाँ राम सामान्य व्यक्ति जैसा व्यवहार करता है। हर व्यक्ति राम के जीवन को उदाहरण के रूप में लेकर उसे अनुसरण करना है। हर व्यक्ति को अपनी पत्नी, बच्चे, भाई, माता-पिता आदि की देख भाल करना चाहिए। अर्थात् अपने समाज से बढकर अपना परिवार है। यहाँ परिवार को प्रमुखता दी जाती है। व्यक्ति को समाज से बढकर परिवार वाले प्रेम करते हैं। अतः व्यक्ति को समाज के बजाय परिवार के प्रति प्रेम दिखाना चाहिए। यही बताने के लिए श्रीराम ने युद्ध के पहले दिन से ही उस तरह का व्यवहार किया। कुछ लोगों ने समाज कल्याण के लिए अपने परिवारों का भी त्याग कर दिया। क्योंकि परिवार समाज का ही एक अंग है। व्यक्तिगत रूप में हर व्यक्ति के लिए समाज का एक अच्छा भाग है परिवार। रामायण परिवारिक बंधनों की विशिष्टता के बारे में उपदेश देती है जो समाज से भी बढकर है।

सीता पति के प्रेम को महत्व देती है। लक्ष्मण और भरत भी बडे भाई के प्रेम को ही महत्व देते हैं। राम ने भी पत्नी, भाई और माता-पिता के प्रेम को ही महत्व दिया। एक पिता अपने पुत्र प्रेम को महत्व दिया। रामायण में पारिवारिक बंधनों के प्रेम का चरमोत्कर्ष दिखाया गया। इन का सजीव रूप रामायण में हमें देखनो को मिलता है। लक्ष्मण ने अपने बडे भाई के लिए अन्न, पानी और निद्रा को चौदह साल तक छोड दिया। सचमुच उस तरह के भ्रातृप्रेम की कल्पना और अंदाजा उस जगत में नहीं कर सकते। इस के अलावा लक्ष्मण अपनी नवोढा पत्नी को भी चौदह साल अपने भाई के लिए छोड दिया। क्या ऐसा भ्रातृ प्रेम इस जगत में मिलेगा? नहीं मिलेगा परंतु उतना चरमोत्कर्ष क्यों दिखाया गया? इस का उद्देश्य यह है कि अगर आप परमकष्ट दिखाएंगे तो लोग कम से कम कुछ स्तर तक उसे अपनाएंगे। अगर कुछ स्तर तक ही दिखाएंगे तो उसे कोई नहीं अपनाएंगे। किंतु हर व्यक्ति को यह याद रखना चाहिए कि सामाजिक बंधनों के संदर्भ में ये सारे पारिवारिक बंधन पवित्र और महत्वपूर्ण हैं। किंतु भगवान के साथ बंधन जोडने के संदर्भ में नहीं।

यह सारे बंधन प्रवृत्ति के सीमा में ही है। अब उस तरह के बंधनों को चरमोत्कर्ष में दिखाने के लिए पारिवारिक बंधन पर्याप्त नहीं है। अर्थात भ्रातृप्रेम का चरमोत्कर्ष दिखाना है तो दो भाइयों के बीच के बंधन पर्याप्त नहीं है। अगर राम और लक्ष्मण सामान्य रूप में भाई-भाई हैं तो उस प्रकार के भ्रातृप्रेम का चरमोत्कर्ष दिखाना असाध्य है। राम भगवान का अवतार और लक्ष्मण उनके भक्त आदिशेष का अवतार है। राम और लक्ष्मण के बीच का बंधन सिर्फ भ्रातृप्रेम नहीं है। वह एक सच्चे भक्त और भगवान के प्रति विश्वास रखने वाला बंधन है। उस प्रकार के भ्रातृबंधन में छिपा हुआ दिव्य बंधन ही चरमोत्कर्ष को दिखा सकते है। लक्ष्मण को अवगत है कि खुद आदिशेष का अवतार श्रीराम नारायण प्रभु का। प्रभु के प्रति उसका जो प्रेम है, संसार में उसे भ्रातृप्रेम के रूप में मानते हैं। इस जगत् केलिए प्रभु के प्रति जो बंधन प्रेम था वह छिपा हुआ है परंतु राम या लक्ष्मण के लिए छिपा हुआ नहीं है। लक्ष्मण के पास श्रीराम को प्रभु के रूप में पहचानने का प्रमाण है – जब राम अपने पैर के स्पर्श से एक पत्थर को नारी के रूप में परिवर्तन करता है तब लक्ष्मण विस्मय प्रकट नहां करता। अगर लक्ष्मण को राम के प्रभु के अवतार के बारे में अवगत नहीं है तो उसे देखकर आश्चर्य के साथ चिल्लाना चाहिए और अयोध्या वापस आने के बाद उस के बारे में सब को बताना चाहिए। वह उस महिमा को शांति से देखकर चुपचाप रहता है। अतः लक्ष्मण को अवगत है कि राम नारायण का अवतार है। फलस्वरूप लक्ष्मण राम को प्रभु मानकर उस के प्रति प्रेम का चरमोत्कर्ष दिखाता है। एक सामान्य भाई की तरह नहीं। लेकिन वह कभी भी उस राज़ को खोलकर नहीं बताता और राम को केवल एक भाई के रूप में ही देखता था। क्योंकि उस का मूल उद्देश्य है इस भौतिक जगत् में भ्रातृप्रेम और भाई चारा की स्थापना करना। भगवान के प्रति प्रेम दिखाना नहीं संसार की दृष्टि में उसका रंग प्रवृत्ति है। परंतु लक्ष्मण, सीता या भरत की आंतरिक दृष्टि से निवृत्ति है। अतः दशरथ, राम, लक्ष्मण, भरत और सीता ने नाटक के प्रवृत्ति भाग में अभिनय किया। प्रवृत्ति का सार है कि संसार के सारे जीव कोटि के प्रति महत्ता दिखाना और प्रेम देना जीव कोटि के अंतर्गत ज्यादा प्रेम और महत्ता मानवता के प्रति दिखाना है। यह प्रवृत्ति का क्षेत्र है। समाज के लिए परिवार को ठुकराना मूर्खता की बात है। समाज कल्याण को छोडकर रावण से अपने प्रिय पत्नी को वापस भेजने के लिए पूछने के द्वारा श्रीराम ने प्रवृत्ति को प्रमाण के साथ दिखाया। ऐसे ही दूसरे प्राणी के कारण मानवता को छोडना भी मूर्खता है। अधिक तीव्रता के साथ प्रेम को पाने के लिए संसार के जीव के बजाय मानवता की ओर बढेंगे तो अपने परिवार के ओर बढिए। यहाँ प्रवृत्ति का अंत होता है। श्रीराम के परिवार ने इस भाग को खेल कर दिखाया और धर्म तथा न्याय का संदेश दिया। परंतु जब वे लोग प्रवृत्ति के स्तर पर अपने सारे परिवारिक बंधन के बारे में बताया ,तब उनके पीछे नीगूढ स्थिति में निवृत्ति भी थी । इस निगूढ निवृत्ति के कारण ही प्रवृत्ति के बंधन चरमोत्कर्ष पहुंच गए।

अपनी पतिव्रता पत्नी (सीता) के प्रति एक पत्नीव्रत का पालन किया राम ने। लेकिन यहाँ राम ने सीता को पतिव्रता नियम का पालन करने के लिए कभी भी आग्रह नहीं किया। पत्नी को बलपूर्वक और

भय के साथ पतिव्रता के रूप में रखना सही मार्ग नहीं है। उसे स्वच्छंद रूप में पतिव्रता बननी चाहिए। राम रावण युद्ध होने के बाद श्रीराम ने सीता से कहा कि तुम अपने दिलचस्प पुरुष के साथ जा सकती हो। इस प्रकार श्रीराम ने अपनी पत्नी को उदार रूप में छोड दिया। इस तरह की स्वतंत्रता पाकर भी जो पत्नी परपुरुष के बारे में नहीं सोचती है। वही सच्चे रूप में पतिव्रता कहलाएगी, लेकिन पति के डर से और बंधनों के कारण जो पत्नी पति के साथ रहते हुए मन में परपुरुषों के बारे में सोचती रहती है वह स्त्री पतिव्रता नहीं बन सकती। इसलिए राम के मुँह से निकली हुई बातों से कृद्ध होकर सीता ने अग्निप्रवेश किया। श्रीराम ने सीता को अग्नि प्रवेश करने केलिए पूछा भी नहीं। अतः श्रीराम ने सीता को परिपूर्ण स्वतंत्रता(माने) स्त्री की स्वतंत्रता और जीवन स्वतंत्रता दोनों को भी दिया। सीता का अग्नि प्रवेश होने के बाद यज्ञ करने के लिए श्रीराम दूसरा विवाह करना अधर्म नहीं है। असल में सीता रहने पर भी दूसरे विवाह कर सकते हैं। **'राजानः बहुवल्लभाः'** अर्थात् मनु धर्मशास्त्र के अनुसार राजा अनेक पत्नियों को पा सकता है। इस के अनुसार अशोक वन में बैठी सीता भी यही सोचती थी कि हे! राम! वनवास खतम होने के बाद तुम अयोध्या जाकर बहु पत्नियों को पाकर खुशी से रहोगे। परिपूर्ण स्वतंत्रता पाने पर भी राम एकपत्नी व्रत को अपना कर रहा।

रामायण कथा में दूसरा भाग है निवृत्ति। इस में भगवान नराकार में आते हैं। हनुमान का श्रीराम से कोई पारिवारिक बंधन नहीं था। उस की माँ अंजना ने कहा कि भगवान नराकार में आएगा और उन का दर्शन करने के लिए किष्किंध पर्वत पर इंतजार करो। अतः निवृत्ति में नराकार भगवान को पहचानना खुला राज़ है। नराकार में आए हुए स्वामी के लिए हनुमान अपने परिवार को छोड देता है वह राम के परिवार के सदस्य नहीं और बाहर के व्यक्ति हैं। अतः निवृत्ति का सार यही है कि अगर तुम नराकार में आये हुए प्रभु को पहचानोगे तो उनके लिए अपने परिवार को भी छोडना पडेगा। इस प्रकार भगवान नराकार में आएंगे। इस बिंदु पर प्रेम चरमोत्कर्ष के स्तर पर किंद्रित होगा।' **सर्वधर्मान् परित्यज्य '।**

हनुमान को अलौकिक शक्तियाँ हैं। इन शक्तियों के द्वारा वह श्रीराम की सहायता की। लेकिन कभी हनुमान को अहंकार नहीं हुआ उतना ही नहीं श्रीराम ने भी कभी अलौकिक शक्तियों का प्रयोग नहीं किया। इस से यह स्पष्ट होता है कि कभी भी अलौकिक शक्तियों द्वारा प्रभु को नहीं पहचानना है। इस के साथ यह भी संकेत मिलता है कि अगर तुम्हें अलौकिक शक्तियाँ मिले तो भी खुद को प्रभु न मानें। अलौकिक शक्ति की गैरहाजरी में हनुमान श्रीराम को प्रभु के रूप में पहचाना। उसे अलौकिक शक्तियाँ होने से भी वह कभी भी प्रभु के स्तर पर नहीं सोचता। यहां यह बिंदु स्पष्ट होता है कि अगर किसी भक्त को हनुमान जैसे अलौकिक शक्तियाँ हो तो भी गर्व और अहंकार नहीं करना चाहिए भगवान ने कृष्ण के अवतार में शक्तियों का प्रदर्शन किया और राम के अवतार में मौन रह गया। रावण जैसे असुर को भी अलौकिक शक्तियाँ प्राप्त है। अलौकिक शक्तियों के सहारे नराकार को पहचानते समय इन बिंदुओं पर

ध्यान देना जरूरी है। हनुमान ने कभी भी पहले के निराकार प्रभु की पूजा नहीं की। वह किसी मूर्ति या शक्ति रूप जैसे ब्रह्म, विष्णु, शिव आदि की भी पूजा नहीं की। वह किसी मूर्ति या शक्ति रूप जैसे ब्रह्म, विष्णु, शिव आदि की भी पूजा नहीं करता। उस प्रकार के रूप असुविधाजनक है। जब वही भगवान बहुत सुविधाजनक माध्यम नर शरीर में उपस्थित है तब उसे छोडकर दूसरे असुविधा जनक रूप की पूजा करना अज्ञान और मूर्खता है।

यह लक्षण या तत्व हनुमान को देखकर सीखना चाहिए। हनुमान जैसे भक्त ही सच्चे भक्त कहलाएँगे। हनुमान ने भी कुछ समय तक कृष्ण को प्रभु के नराकार के रूप में नहीं पहचाना। किंतु बाद में कृष्ण भी वही प्रभु का रूप है मानकर उन की पूजा की। यहाँ हनुमान ने दूसरों के लिए अज्ञानी के रूप में अभिनय किया। हनुमान के क्रिया कलापों द्वारा जो महान संदेश मिल रहा है उसे बडे बडे विद्वान और भक्त भी समझ नहीं पा रहे हैं। वह महान संदेश है – हर युग (पीढी) में भगवान नराकार में आएगा। कोई भी भक्त हनुमान जैसे दो पीढियों तक जीवित नहीं रहेगा जो राम के समय में और कृष्ण के समय में भी प्रस्तुत था। हनुमान प्रभु के दो नराकारों के साथ उपस्थित था। कभी कभी आप के समय में भी दो नराकारों के रूप में प्रभु उपस्थित होंगे। उपरोक्त घटना के द्वारा हनुमान ने इस बिंदु को साबित किया शिरडी साई और अक्कलकोट महराज दोनों नराकार सहअस्तित्व के साथ आये थे। वे दोनों दत्तप्रभु के नरावतार हैं। ऐसे ही राम और परशुराम, बलराम और कृष्ण दोनों अस्तित्व रखे थे। रावण को भी हनुमान जैसे सारे अलौकिक शक्तियाँ उपलब्ध थे। अलौकिक शक्तियों के साथ प्रभु को पहचानने वाले भक्त का रावण एक उदाहरण है। वह ब्रह्मा और शिव को मान लिया क्योंकि उन दोनों से उसे अलौकिक शक्तियाँ प्रदान की। रावण ने शक्ति रूप ब्रह्मा और शिव की पूजा की। उसने ब्रह्म से वरदान माँगते समय नराकार की उपेक्षा की। इस से यह स्पष्ट होता है कि रावण ने कभी भी विश्वास नहीं किया कि भगवान नराकार में आयेगा। गीता में कहा गया कि भगवान नराकार में ही आयेगा। दूसरे आकार में नहीं (मानुषीं तनुमाश्रितम्... गीता) (तत् सृष्ट्वा तदेवानुप्राविशत्... वेद) अर्थात् प्रभु नराकार में आकर दिव्य ज्ञान का संदेश देते हैं। दूसरे आकार आध्यात्मिक मार्ग दर्शन के लिए असुविधा जनक है। जब प्रभु कूर्म आदि अवतारों में आया था तब वह रूप दानवों को मारने तक ही सीमित था। कोई आध्यात्मिक संदेश देने के लिए नहीं था। अतः रावण ने नराकार प्रभु को पहचाना नहीं। इस प्रकार रावण जैसे लोग भगवान नराकार में आनेवाली बात पर विश्वास नहीं करते। उस तरह के लोग रावण जैसे अहंकार और ईर्ष्यालु होंगे और अपने समय के नराकार को अपनाएंगे नहीं। वे लोग सिर्फ भगवान का निराकार रूप का या शक्तिरूप का या मूर्तियों की पूजा करते हैं। वे खुद को ब्रह्मा या प्रभु कहलाते हैं। रावण ने न प्रवृत्ति का पालन किया न निवृत्ति का। रावण ने सीता के प्रेम के लिए लालायित होता था और अपनी पत्नी मंडोदरी के बजाय सीता से प्रेम करता था। वह बाहर वालों के लिए अपने परिवार की उपेक्षा करता था। अतः उसने प्रवृत्ति का उल्लंघन भी किया। फलस्वरूप वह पूर्ण रूप से विनाश हो गया।

इस प्रकार अगर हम लक्ष्मण, हनुमान और रावण को तुलना करके देखेंगे तो संपूर्ण आध्यात्मिक ज्ञान को समझ सकते हैं। लक्ष्मण प्रवृत्ति के लिए प्रतीक है जो अपने परिवार के प्रति सावधान रहा। हनुमान निवृत्ति के प्रतीक रूप में रहा जो प्रभु के नराकार के प्रति सचेत रहा और उन्हें अपने परिवार से बढकर प्रेम किया। रावण ने न अपने परिवार की ओर ध्यान दिया और न नराकार प्रभु के प्रति प्रेम दिखाया। वह खुद को भगवान का रूप सोचता था। इसलिए सर्वनाश हो गया। अतः रामायण, गीता और उपनिषदों का सारांश है। वह प्रयोग शाला में निर्वाह किया गया प्रायोगिक पक्ष है। गीता में सैद्धांतिक पक्ष द्वारा सूचित किया गया है। इसलिए हनुमान ने रामायण में अभिनय किया और कृष्णावतार में श्रवण किया (गीता को सुना) उसने जो अभिनय किया वह सच है उसे गीता सुनने के बाद मालूम हुआ। श्रीकृष्ण और अर्जुन के रथ के ऊपर जो झंडा था, उस पर हनुमान बैठा था। युद्ध क्षेत्र में अर्जुन के श्रीकृष्ण द्वारा दिया गया गीता संदेश को सुना (इस के द्वार यह मालूम होता है कि सैद्धांतिक संदेश के शिवाय आध्यात्मिक ज्ञान का अध्ययन हमेशा उच्च स्तर पर रहता है।

इस से हमें ये मालूम पडता है कि हर पीढि में प्रभु नराकार में उपस्थित होता है (यदा यदा हि... गीता) इस से हमें शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए। वह यही है कि नरावतार रूप वाले सद्गुरु का आश्रय पाने के बाद उन के द्वारा किये गये कार्यों की आलोचना जल्द बाजी में नहीं करनी चाहिए। समझने के लिए प्रयास करना चाहिए। राम को ही न समझ पायेंगे तो कृष्ण को कैसे समझ पायेंगे? इस प्रकार लोग रामायण के अंतरार्थ को समझ कर साधना के लिए उस का उपयोग करना चाहिए। राम का पूरा जीवन त्याग स्वरूप है अर्थात् दत्त स्वरूप ही है। धन ही सभी कलहों का कारण और सभी अधर्मों का जड है। उस तरह के धन का त्याग करने से ही स्वामी अनुग्रह भी सदाचरण के रूप में प्राप्त होगा। इस प्रकार धर्म और मोक्ष रूपी प्रवृत्ति तथा निवृत्ति नामक दो शाखाओं का मूल तत्व ही श्रीराम तत्व है।

'धनमूलमिदं जगत्' कहकर वशिष्ट और **'धनेन त्यागेनैके'** कहकर वेद वचन इस सत्य की शिक्षा दे रहे हैं। इस प्रकार राम ने अपने आचरण के द्वारा त्याग और धर्म की स्थापना भी की। उस के अलावा मोक्ष मार्ग की भी शिक्षा दी। इस तरह भगवान प्रवृत्ति और निवृत्ति दोनों की स्थापना करेगा। दोनों के लिए भगवान ही मूल आधार हैं।